IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

भारत में लैंगिक असमानता का समीक्षात्मक अध्ययन

[1]Suman Kumar Premee, [2] Shweta Sonkar,

[1,2]Research Scholar , Department of Economics MGKVU Varanasi, UP, India.

शोध सारांश

भारत एक विकासशील देश हैं। भारत के विकसित होने के लिए तीव्र आर्थिक विकास होना आवश्यक है। यह तभी संभव है जब स्त्री व पुरुष का भारत के विकास में समान भागीदारी हो। महिलाओं का आर्थिक सशक्तिकरण समावेशी आर्थिक विकास के केंद्र में है । महिलाओं के आर्थिक सशक्तिकरण हेतु निवेश करने से लैंगिक समानता गरीबी उन्मूलन समावेशी विकास मार्ग प्रशस्त होगा। भारतीय संस्कृति में नारी को बहुत ही महत्व प्रदान किया गया है। संस्कृत श्लोक – यस्य पूज्यंते नार्यास्तु तत्त रमन्ते देवताः। यानि जहाँ नारी की पूजा होती है, वहाँ देवता निवास करते हैं। किसी देश की अर्थव्यवस्था का विकास वहाँ की लोगों की आर्थिक स्थिति पर निर्भर करती है, जिसमें स्त्री व पुरूष दोनों की समान भागीदारी होनी जरूरी है, परंतु जो हालत दिख रहे हैं उसमें नारी के साथ भेद–भाव होता दिख रहा है। भारत में लोग 21वीं सदी में भी पुत्र होने पर उत्सव व पुत्री होने पर शोक मनाते हैं। स्त्रियों के प्रति हीनता की भावना होना शर्म की बात है। यहाँ लैंगिक साक्षरता का अंतर, लैंगिक अनुपात में काफी असमानता है। भारत के जिस हिस्से में लैंगिक साक्षरता का अंतर अधिक है वहाँ गरीबी भी अधिक है। भारत में लैंगिक असमानता के लिए सरकारी तंत्र के साथ–साथ हमारा समाज भी इसके बराबर के भागीदार हैं। विभिन्न क्षेत्रों में महिलाओं की कम भागीदारी व महिलाओं के प्रति भेद–भाव होना आम बात हो गयी हैं। शिक्षा लैंगिक असमानता व गरीबी का आपस में गहरा संबंध है। अतः बिना लैंगिक भेद–भाव को दूर किये विकसित भारत का सपना साकार नहीं होगा। अतः इस अध्ययन का मुख्य उद्देश्य भारत को विकसित बनाने हेतु लैंगिक भागीदारी का महत्व व इसके अड़चनों पर ध्यान आकृष्ट कराना है।

की कुंजी :– साक्षरता, लैंगिक अनुपात, आरक्षण, दहेज प्रथा, निर्धनता

प्रस्तावना –

भारत विकासशील देश होने के साथ–साथ एक कृषि प्रधान देश भी है। यहाँ की अधिकांश आबादी ग्रामीण क्षेत्रों में निवास करती है। भारत विश्व गुरू भी रह चुका है। भारत में वैदिक काल में महिलाओं की स्थिति अच्छी थी। सारे कार्यों में महिलाओं की भागीदारी होती थी, परंतु समय बीतने के साथ–साथ महिलाओं की स्थितियों में बदलाव आया। भारत में महिलाओं की मुस्लिम शासनकाल में सबसे अधिक स्थिति खराब हुई। फलस्वरूप महिलाओं की समाजिक कार्यों व अन्य आर्थिक व गैर आर्थिक गतिविधियाँ समाप्त होती गई। महिलाओं के परदा प्रथा व बुर्का का प्रचलन बढ़ने लगा। अब महिलाएँ घर के कामों तक ही सीमित हो गयी। यों कहें तो महिलाएँ घर की शोभा मात्र बनकर रह गयी। महिलाओं को उपभोग की वस्तुएँ समझी जाने लगी। महिलाएँ अब नीतिगत कार्यों में भाग नहीं ले सकती थी। सती प्रथा का भी प्रचलन बढ़ा, बाल–विवाह का प्रचलन काफी तेजी से बढ़ा। बाद में भारत अंग्रेजों के अधीन हुआ भारत का संपर्क पश्चिमी देशों से हुआ। पश्चिमी सभ्यता भी भारत में पनपने लगी। अंग्रेजों के शासन के समय ही सती प्रथा प्रतिबंधित घोषित हुआ। राजा राम मोहन राय, स्वामी दयानंद सरस्वती आदि महापुरूषों ने विधवा विवाह स्त्री शिक्षा व सती प्रथा का विरोध किया। समाज में महिलाओं की स्थिति में सुधार की नींव पड़ी। कस्तूरबा गांधी, बेगम हजरत महल आदि महिलाओं ने स्वतंत्रता आंदोलन में सफलतापूर्वक सहयोग की। महात्मा गांधी के आंदोलनों में भी महिलाएँ भाग लेती रही परंतु आजादी के 73 सालों के बाद भी आज भारतीय समाज में स्त्री व पुरूषों के बीच काफी असमानता है। शिक्षा का क्षेत्र हो, चिकित्सा का क्षेत्र हो, विज्ञान का क्षेत्र हो या खेल का क्षेत्र हो, महिलाओं ने दिखा दिया कि अगर उन्हें

अवसर मिले तो वह प्रत्येक क्षेत्र में बेहतर कर सकती है। भारत में आज के 21वीं सदी में भी आज भी पुत्र के जन्म पर धुमधाम से अनेक प्रकार के उत्सव मनाये जाते हैं वहीं लड़कियों के जन्म पर घर में उदासी का या मातम का महौल छा जाता है। पुत्र चाह में उनके माता–पिता द्वारा पुत्री को जन्म से पहले ही उसे गर्भ में ही मरवा दिया जाता है। इस कार्य ने सारी मानवता को शर्मसार कर दिया है। धर्मशास्त्रों में स्त्री को देवी जननी माना फिर भी उसे अपने अस्तित्व को बचाने के लिए जीवन के हर कदम पर भीषण संघर्ष करना पड़ता है। जो महिलाएँ अपने पति, बच्चे, भाई के लम्बी उम्र के लिए, सुखी रहने के लिए अनेक प्रकार के व्रतों को करती है। घर को संतान रूपी फूल से घर–परिवार को सुखी बनाती है, उसी देवी को लड़की जन्म होने पर कई यातनाएँ उसके परिवार वालों द्वारा दी जाती हैं। इस सब कारणों से लैंगिक असमानता बढ़ी है। आजादी के 73 सालों के बाद भी आज हम कहाँ खड़े हैं, यह सोचने का विषय हैं। आज भी यह सत्य है कि ऐसी परंपराओं, संरचनाओं व प्रणालियों को संरक्षण प्रदान कर रहे हैं जो स्त्री विरोधी हैं।

उद्देश्य –

- लैंगिक असमानता का विश्लेषण करना ।
- अर्थिक विकास और समानता के बीच संबंध का अध्ययन करना।
- नारी शिक्षा का गरीबी उन्मूलन से संबंध का विश्लेषण करना और समानता व राष्ट्रीय शिक्षा स्तर के बीच संबंधों का विश्लेषण करना ।

शोध प्रविधि –

यह शोध पत्र अध्ययन द्वितीयक समंक पर आधारित है जिसे राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय शोध जर्नल में प्रकाशित शोध पत्र लेख विभिन्नि समाचार पत्रों पुस्तकों सरकारी रिपोर्ट सरकारी वेबसाइट पर उपलब्ध आंकड़ों पर आधारित है इस विधि में विश्लेषण हेतु पद की प्रणाली का प्रयोग किया

विवरण–

भारत में लैंगिक असमानता का सबसे बड़ा कारण है पितृसत्तात्मक परिवार है। यह वह प्रणाली है जिसमें पुरूषों द्वा स्त्रियों पर वर्चस्व जमाया जाता है, स्त्रियों का शोषण किया जाता है। आज भी महिलाओं को अपने जीवन से जु महत्वपूर्ण फैसले लेने का अधिकार नहीं है। इसके दो कारण मुख्य रूप से दोषी हैं एक तो निर्धनता दूसरा अशिक्ष अगर हम शिक्षा की बात करें तो भारत के विभिन्न राज्यों में साक्षरता के प्रतिशत में पुरूष व महिलाओं की भागीदा इस तालिका द्वारा स्पष्ट कर सकते हैं :

क्र0 सं0	राज्य	साक्षरता (प्रतिशत में)	पुरूष साक्षरता (प्रतिशत में)	महिला साक्षरता (प्रतिशत में)	निर्धनता (प्रतिशत में)
1.	अंडमान एवं निकोबार	86.27	90.11	81.84	1.00
2.	आंध्र प्रदेश	67.4	75.56	59.74	9.20
3.	अरूणाचल प्रदेश	66.95	73.69	59.57	34.68
4.	असम	73.18	78.81	67.27	31.98
5.	बिहार	63.82	73.39	53.33	33.74
6.	चंडीगढ़	86.43	90.54	81.38	21.81
7.	छत्तीसगढ़	71.04	81.45	60.59	39.93
8.	दादर एवं नगर हवेली	77.65	86.46	65.93	39.31
9.	दमव व दिव	87.07	91.48	79.59	9.86
10.	दिल्ली	86.34	91.03	80.93	9.91
11.	गोआ	87.40	92.18	81.84	5.09
12.	गुजरात	79.31	87.23	70.73	16.63
13.	हरियाणा	76.64	85.38	66.77	11.16
14.	हिमाचल प्रदेश	83.78	90.83	76.60	8.06
15.	जम्मू–कश्मीर	68.74	78.26	56.21	10.35
16.	झारखण्ड	67.63	78.45	56.21	36.96
17.	कर्नाटक	76.50	82.85	68.13	20.91

18.	केरल	93.91	96.02	91.98	7.05
19.	लक्षद्वीप	92.28	96.11	88.25	2.77
20.	मध्य प्रदेश	70.63	80.53	60.02	31.65
21.	महाराष्ट्रा	82.91	89.82	75.48	17.35
22.	मणिपुर	79.85	86.49	73.17	36.89
23.	मेघालय	75.48	77.17	73.78	11.87
24.	मिजोरम	91.58	93.72	89.40	20.87
25.	नागालैंड	80.11	83.29	76.89	18.88
26.	उड़ीसा	73.45	83.40	64.36	32.59
27.	पुदुचेरी	86.55	92.12	81.22	9.69
28.	पंजाब	76.68	81.48	71.34	8.26
29.	राजस्थान	67.06	80.51	52.66	14.71
30.	सिक्किम	82.20	87.29	76.43	8.19
31.	तमिलनाडू	80.33	86.81	73.86	11.28
32.	तेलंगाना	66.50	–	–	–
33.	त्रिपुरा	87.75	92.18	83.15	14.05
34.	उत्तर प्रदेश	69.72	79.24	59.26	29.43
35.	उत्तराखण्ड	79.63	88.33	70.70	11.26
36.	पश्चिम बंगाल	77.08	82.68	71.16	19.98
	सम्पूर्ण भारत	79.31	87.23	70.73	21.92

(Source: census 2011)

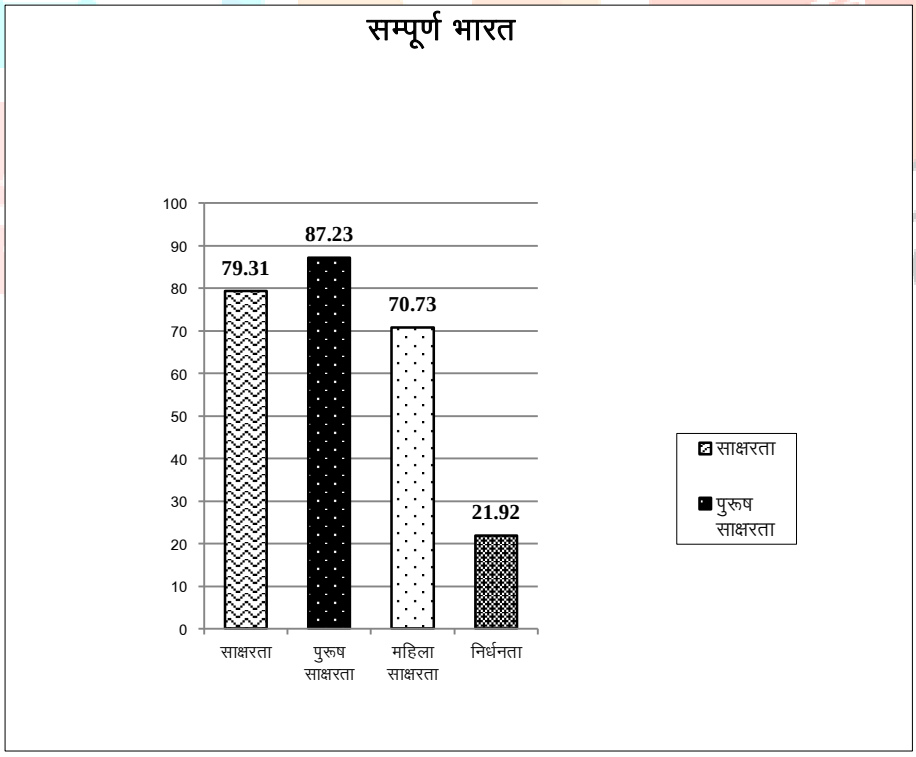

अगर हम उपर्युक्त तालिका का विश्लेषण करें तो हम पाते हैं कि जिस राज्य में अधिक निर्धनता है वहाँ स्त्री व पुरूष में साक्षरता का दर अधिक है। हालांकि कुछ राज्यों के साथ ऐसा नहीं है। जिस राज्य में स्त्री व पुरूषों के बीच साक्षरता का अंतर कम है वहाँ निर्धनता भी कम है। गोवा व केरल जैसे राज्यों में जहाँ स्त्री व पुरूषों के साक्षरता दर में अंतर कम है वहाँ गरीबी भी कम है। बिहार में साक्षरता दर कम है, स्त्री व पुरूषों के बीच साक्षरता का अंतर अधिक है। अतः यहाँ गरीबी भी राष्ट्रीय औसत से अधिक है। जहाँ स्त्री व पुरूषों की साक्षरता प्रतिशत का अंतर अधिक है वहाँ गरीबी भी अधिक है। इस कारण भी महिलाओं की स्थिति खराब है।

अगर हम भारत की साक्षरता की बात करें तो कुल साक्षरता दर 79.31 प्रतिशत जिसमें 87.23 प्रतिशत पुरूष व 70.73 प्रतिशत महिलाएँ साक्षर हैं। यहाँ पुरूष व महिलाओं की साक्षरता का अंतर काफी अधिक है।

अब हम लैंगिक अनुपात की बात करते हैं जो इस तालिका में दिखाया गया है –

क्र0सं0	राज्य/केन्द्र शासित प्रदेश	लैंगिक अनुपात
1.	केरल	1084
2.	पुदुचेरी	1037
3.	तमिलनाडू	996
4.	आंध्र प्रदेश	993
5.	छत्तीसगढ़	991
6.	मेघालय	989
7.	मणिपुर	985
8.	तेलंगाना	985
9.	उड़ीसा	979
10.	मिजोरम	976
11.	गोआ	973
12.	कर्नाटका	973
13.	हिमाचल प्रदेश	972
14.	उत्तराखंड	963
15.	त्रिपुरा	960
16.	असम	958
17.	पश्चिम बंगाल	950
18.	झारखण्ड	948
19.	लक्षद्वीप	946
20.	अरूणाचल प्रदेश	938
21.	नागालैंड	931
22.	मध्य प्रदेश	931
23.	महाराष्ट्रा	929
24.	राजस्थान	928
25.	गुजरात	919
26.	बिहार	918
27.	उत्तर प्रदेश	912
28.	पंजाब	895
29.	सिक्किम	890
30.	जम्मु–कश्मीर	889
31.	हरियाणा	879
32.	अंडमान व निकोबार	876
33.	दिल्ली	868
34.	चंडीगढ़	818
35.	दादर नगर हवेली	774
36.	दमन व दीव	618
	सम्पूर्ण भारत	943

(Source:census2011)

देखा जाय तो केरल व पुदुचेरी में लैंगिक अनुपात अच्छी है परंतु जहाँ शिक्षा प्रतिशत का अंतर अधिक है वहाँ पुरूषों की तुलना में महिलाओं की संख्या कम है। लैंगिक असमानता के पीछे एक बड़ा कारण दहेज प्रथा का होना। बेटी की शादी में दहेज देना होता है फलस्वरूप लोग बेटी होना पसंद नहीं करते हैं। दहेज प्रथा के लिए स्त्री व पुरूष दोनों ही जिम्मेदार हैं। खासकर वे महिलाएँ जो स्वयं ही इसका शिकार रही हो वे ही दहेज प्रथा को बढ़ावा देते है। जब लड़की की शादी करनी हो तो व्यक्ति दहेज देना नहीं चाहते हैं लेकिन वही व्यक्ति जब अपने लड़कों की शादी करते है तो वह व्यक्ति दहेज की मांग करते हैं। यहाँ तक कि उस घर की महिलाएँ खुद इस प्रथा का विरोध नहीं करते हैं कई बार तो दहेज के कारण बेटियों की आत्महत्या/हत्या भी हो जाती है। दहेज के लिए महिलाओं को प्रताड़ित किया जाता है। अब हम आते हैं सरकारी तंत्र पर तो आज तक संसद में महिलाओं के आरक्षण पर बिल लटका पड़ा है। समाज में पुरूष लोग महिलाओं को अधिकार देना नहीं चाहते हैं। भारत को 2019 में ग्लोबल जेंडर में 129 देशों में 95वाँ स्थान प्राप्त हुआ है। महिलाओं की खराब स्थिति के लिए समाज व सरकार दोनों ही दोषी हैं। आजकल महिलाओं के उसके कार्यस्थल या अन्य विभिन्न क्षेत्रों में महिलाओं के साथ अभद्रता होती है। मी0टू0 अभियान में इस तरह का खुलासा भी हुआ। सफेदपोश हो या नौकरशाह महिलाओं के प्रति कैसी भावना रखते हैं यह जगजाहिर है। महिलाओं के साथ दुष्कर्म, बलात्कार की घटना भी बढ़ी है, अपहरण भी बढ़ा है। इस आजाद भारत में भी महिलाओं को देह–व्यापार में जबरदस्ती धकेला जा रहा है। जो अवैद्य तरीके से शहर के कई हिस्से में संचालित होता रहा है। महिलाओं को कम मजदूरी देना भी इसका कारण है। महिलाओं को आरक्षण नहीं देना भी इसमें शामिल ळें

सुझाव –

सर्वप्रथम महिलाओं को सशक्त बनाना है तो सरकारी व गैर सरकारी संस्थानों में नौकरियों में महिलाओं को संवैधानिक नियमों के तहत आरक्षण प्रदान करना होगा ताकि विभिन्न क्षेत्रों में महिलाओं की भागीदारी बढ़े। इस दिशा में बिहार सरकार ने एक कदम आगे बढ़ाते हुए शिक्षा के क्षेत्र में महिलाओं को 50 प्रतिशत आरक्षण देकर एक कदम आगे बढ़ाया है, लेकिन इतना ही पर्याप्त नहीं है। विधानसभा, लोकसभा, पंचायती चुनाव आदि में भी महिलाओं की आरक्षण की व्यवस्था सुनिश्चित होनी चाहिए। स्त्री शिक्षा को बढ़ावा देने हेतु विभिन्न तरह की सरकारी सहायता देनी चाहिए। सिंगल गर्ल्स छात्रवृत्ति, बिहार में इंटरमीडिएट पास छात्राओं व स्नातक पास करने वाली छात्राओं को 10000 से 25000 रूपये की सहायता राशि इस ओर एक बढ़ता कदम है। भारत सरकार व अन्य राज्यों को भी इस प्रकार की सहायता देनी चाहिए। स्कूल–कॉलेज की छात्राओं को साईकिल का वितरण इस दिशा में एक अच्छा कदम है। सुकन्या समृद्धि योजना, मुख्यमंत्री कन्या उत्थान योजना में अधिक राशि का प्रावधान होनी चाहिए। जेंडर बजटिंग में अधिक राशि का प्रावधान होनी चाहिए ताकि महिलाओं के कल्याण के लिए अधिक कदम उठाया जा सके। बेटी बचाओं, बेटी पढ़ाओं कार्यक्रम भी इस दिशा में अच्छी पहल है। एक महत्वपूर्ण उपाय यह होनी चाहिए कि यदि महिलाओं के साथ कहीं अभद्रता हो या दुष्कर्म जैसी घटनाएँ हो तो तुरंत ही स्पेशल कोर्ट का गठन का कड़ी निगरानी में कम समय में जाँच हो तथा दोषियों को कड़ी से कड़ी सजा का प्रावधान होनी चाहिए। स्त्रियों व पुरूषों के बीच जो साक्षरता प्रतिशत का अंतर है उसे समाप्त किया जाना चाहिए। सबसे बड़ी बात इसके लिए व्यक्ति, परिवार व लोगों की सोच को भी बदलना होगा। लोगों में बेटी को लक्ष्मी रूपी धन है की भावना विकसित करनी चाहिए। बेटी नहीं बचाओगे तो बहू कहाँ से लाओगे यह भावना जनमानस में होनी चाहिए।

निष्कर्ष –

हम कह सकते हैं कि लोगों की मानसिकता बदलनी होगी। शिक्षा का स्तर ऊँचा उठाने व महिलाओं को विभिन्न क्षेत्रों में भागीदारी बढ़ाने से ही लैंगिक असमानता में कमी होगी, तभी विकसित समाज व समृद्ध भारत होगा।

Reference –

1 Padmavati, K. (2016). Empowerment of Women. New Delhi : Serials Publication
2 Ranjan, A. (2016). MGNREGA and Women Empowerment. New Delhi : Ocean Books (P) Ltd.
3 Gupta, S & Gupta, A. (2016). Problems of modern Indian Education. Allahabad : Sharda Pustak bhavan
4 Mishra,S & Puri, V. (2018-19) Indian Economy. Mumbai : Himalaya Publishing House
5 Economic Review, Ministry of Finance, Government of India
6 https://censusindia.gov.in
7 https://wcd.nic.in
8 http://www.nsiindia.gov.in
9 https://niti.gov.in
10 https://nss.gov.in
11 https//www.who.int
12 https//www.economictimes.com
13 https//www.hindustantimes.com
14 The Hindu (News Paper)
15 Census of India (2011)
16 Yojna monthly magazine